Vijay Kumar Jha.
Assot Prof
Deptt in History
V.S.J. College Rajnagar.
Degree Part I

The Kushans and Contributions.

कुषाण कालीन इतिहास के मुख्य स्रोत चीनी है। भारतीय सन्दर्भ में एक मात्र राहुल सांकृत्यायन ने मूल चीनी ग्रंथों का अध्ययन कर कुषाणों के बारे में अपना विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक विश्लेषण एवं अनुसंधान, स्वर्ण एवं ताम्र मुद्रायें तथा बौद्ध साहित्य से कनिष्क कालीन इतिहास कि जानकारी मिलती है। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार चीनी सम्राट शी-ह्वांग-ती ने हूणों के आक्रमण से चीन को बचाने के लिये 255-206 ई० पू० में चीन में महा दिवार का निर्माण करवाया था। चीन के प्रहार से हूणों ने बचने के लिये पश्चिम कि ओर चले गये। ये यू-ची कबीले के थे।

कुषाणों के दो राजवंश थे (1) कडफिसस राजवंश (2) कनिष्क। कडफिसस राजवंश में दो राजा कुजुल कडफिसस 15 से 65 ई० तक शासन किया और दूसरा विम कडफिसस जो 65 से 78 ई० तक शासन किया यह शैव धर्मावलम्बी थे विम कडफिसस के बाद कुषाण शासन कि बागडोर कनिष्क के हाथों में आयी जो इस वंश के सबसे महान सम्राट थे।

कनिष्क के राजकाल में विषय में विद्वानों में मतभेद है। राहुल सांकृत्यायन ने इनके राजकाल 78 से 101 ई० माना है जिसकी पुष्टि कनिष्क के राजकाल निर्धारण के लिये लंदन में अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ जिसमें आम सहमति राहुल सांकृत्यायन के कथन को ही माना। कनिष्क भारत ही नहीं बल्कि एशिया के एक महान शासक महान निर्माता था। मथुरा तथा सांची के अभिलेख 78-102 ई० कनिष्क का राजकाल मानते हैं।

कनिष्क ने चन्द्रगुप्त कि तरह साम्राज्य का विस्तार किया था तो

तो अशोक कि तरह बौद्ध धर्म का प्रसार प्रचार किया। कुजुल कडफिसस ने साम्राज्य संगठित किया। वीम कडफिसस ने उसका विस्तार किया तो कनिष्क ने दोनों से आगे बढ़कर साम्राज्य की नींव मजबूत किया।

सारनाथ अभिलेख से स्पष्ट होता है कि कनिष्क ने बंगाल, बिहार को भी साम्राज्य में मिला लिया। कनिष्क ने पाटलिपुत्र के राजा को पराजित कर युद्ध क्षति के रूप में बौद्ध दार्शनिक अश्वघोष तथा बुद्ध के भिक्षा पात्र प्राप्त किया। कनिष्क ने गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, राँची, पटना, वैशाली, राजगीर आदि को साम्राज्य में मिलाया जिसका प्रमाण सिक्कों से प्राप्त होते है।

कनिष्क ने काशगर, यारकन्द और खोतान पर विजय प्राप्त किया जिस के विजय के लिये कनिष्क ने 80 ई० में 70000 घुड़सवारों सेना भेजा। इस युद्ध में कनिष्क कि पराजय हुई किन्तु चीनी राजा पान चाऊ के मृत्योपरान्त चीन पर विजय प्राप्त की। कनिष्क के शासन काल के 11वें वर्ष में इसने सिन्ध निचली सिंधु घाटी को जीत लिया। कनिष्क ने कश्मीर पर अधिकार कर कनिष्कपुर नगर बसाया। साँची के एक अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि दक्षिण भारत में विंध्य पर्वत तक कनिष्क का साम्राज्य था।

इस प्रकार कनिष्क एक महान विजेता का परिचय देते हुये कश्मीर से विंध्य पर्वतमाला तक तथा अफगानिस्तान से पूरब में पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार तक साम्राज्य कायम किया। इस विशाल साम्राज्य कि राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) थी। 78 ई० में शक संवत् कनिष्क ने ही चलाया था। कनिष्क के उत्तराधिकारी हुविष्क थे जिन्होंने हुविष्कपुर नामक नगर बसाया। हुविष्क बौद्ध धर्मावलम्बी थे तथा मथुरा में बौद्ध विहार कि स्थापना किया था। कनिष्क के बाद इस वंश में कोई ऐसा शासक नहीं रहा जो इतने बड़े साम्राज्य को सम्भाल सके। अन्ततः 176 ई० के लगभग कुषाण साम्राज्य का अन्त हो गया। कुषाण वंश के पतन से गुप्त काल के अभ्युदय के मध्य के काल को अन्धकार युग कहा गया है।

सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति :— कुषाणकाल में यूनानी, शक, पार्थियन, कुषाण आदि ने भारत में अपनी पहचान खो दिया और भारतीयकरण के रंग में रंग गया। कुषाण भारत में वैवाहिक संबंध स्थापित किया और इक्ष्वाकु नरेश पुरुषदत्त ने उज्जैन के शकनरेश

Scanned with Can

कि कन्या महारिका से शादी किया। इन विदेशीयों ने अपने नामों का भी भारतीयकरण कर लिया। अतः कुषाण काल में जितना विदेशीयों का भारतीयकरण हुआ उतना किसी भी काल में देखने को नहीं मिलता है।

कुषाण काल में भवन निर्माण कला का पूर्ण विकास हुआ। इस काल में कुएँ बनाने में पक्के ईंटों का प्रयोग होता था। इंट खण्डों का बना होता था। ईंटों वाले कुओं का भग्नावशेष मिले हैं। लाल पालिशदार मृदभाण्ड कुषाण काल कि विशेषता रही है इसमें कुआरा और टोंटियों का भी भव्य आकर्षक था।

कुषाण कालीन अर्थव्यवस्था का मूल स्रोत रेशम मार्ग पर नियंत्रण था। रेशम मार्ग चीन से ईरान तथा पश्चिमी एसिया तक जाता था यह मार्ग कुषाण साम्राज्य से गुजरता था। भारत के व्यापारी चीन से रेशम खरीद कर रोम भेजते थे तथा मुनाफा स्वरूप रोम से भारी मात्रा में सोना प्राप्त करते थे प्लीनी के अनुसार रोम भारत से मसाले, मोती, मलमल, हाथी दांत की वस्तुऐ औषधि, चन्दन, इत्र आदि आयात करता था। रोम प्रतिवर्ष भारत से विलासिता की सामग्री आयात करते थे। वाणिज्य व्यापार में सिक्कों का प्रचलन था। कुषाणों ने शुद्ध सोने के सिक्के जारी किये जिसका उपयोग लेन देन में होता था। पश्चिमोत्तर प्रदेशों में तांबे के सिक्के प्रचलित थे। उज्जैनी प्रमुख व्यापारिक नगर थे यहाँ गोमेद, इन्द्रगोप जैसे रत्नों का काम होता था। यहाँ से गोमेद पत्थरों का निर्यात होता था।

कुषाण काल में संस्कृत साहित्य का संरक्षण एवं संवर्धन हुआ। रुद्रदामन का काठियावाड़ अभिलेख संस्कृत एवं काव्य शैली का उत्कृष्ट नमूना है। अश्वघोष का बुद्धचरित, सौन्दरानन्द का संस्कृत काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। कुषाणों ने भारत में उत्कृष्ट अश्वारोही सेना कि परम्परा चलायी, कुषाणों को घुड़सवारी का शौक बहुत था, पगड़ी, कुर्ता, पजामा, लम्बे कोट पहनने कि प्रथा चलायी योद्धा सिर पर पगड़ी तथा बूट पहनते थे।

कुषाण राजा अलग अलग धर्मों के अनुयायी थे किन्तु कुषाण के काल में शिव के मूर्ति कि कल्पना किया गया। अर्द्धनारीश्वर के साथ नन्दी कि भी मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। कनिष्क ने महायान धर्म का अनुयायी था और चीन में उसका प्रसार करवाया। कुषाण काल में

MAY						2019
Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

Scanned with Cam

मूर्ति कला कि विभिन्न शैलियों का विकास हुआ। कनिष्क ने महायान धर्म को राजधर्म घोषित किया तथा इसके प्रसार प्रचार की व्यवस्था किया।

कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में कुषाणों कि अद्वितीय देन है। कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरुषपुर में 400 फीट ऊँचा एवं 13 मंजिलों टावर का निर्माण करवाया जिसके ऊपर लौह क्षत्र स्थापित किया गया था। सिरसुख नामक स्थान पर एक नये शहर बसाया। कनिष्क के काल में कला के क्षेत्र में दो कला शैलियों का निर्माण हुआ (1) गान्धार, (2) मथुरा

गान्धार कला शैली को ग्रीको रोमन, ग्रीको बुद्धिस्ट, हिन्द यूनानी आदि नामों से पुकारा जाता है। गान्धार कला के द्वारा बुद्ध मूर्ति अत्यन्त सजीव होते थे तथा यो ध्यान, पद्मासन धर्मचक्र प्रवर्तन, वरद हस्त मुद्रा में होते थे। बुद्ध के अतिरिक्त बोधिसत्वों के इस शैली कि मूर्तियां मिली है।

मथुरा शैली का आरम्भ ई०पू० प्रथम सदी के अन्त में हुआ था। मथुरा शैली कि निर्मित मूर्तियां पश्चिम में तक्षशिला और मध्य एशिया तक पूर्व में श्रीवस्ती और सारनाथ तक फैला था। बुद्ध कि मूर्ति सर्वप्रथम मथुरा कला शैली में ही बना तत्पश्चात गान्धार कला शैली में। मथुरा शैली में महायानियों कि विशाल प्रतिमाएं का निर्माण हुआ। मथुरा कला शैली में विभिन्न धर्मों कि मूर्तियां का निर्माण हुआ। मथुरा कला शैली का मुख्य नमूना इन्द्रिय सुख और सौन्दर्य से व्याप्त स्त्रियों कि मूर्तियां मुख्य है। मथुरा कि शैली यथार्थ कि अपेक्षा प्रतीकात्मक तथा आध्यात्मिक एवं भावना प्रधान है।

Scanned with Can